

## समय नहीं है

\* ब्रह्मकुमार शिवराज, दहिसर (पू), मुंबई

‘समय नहीं है’ प्रायः यह वाक्य हमें हर किसी के मुख से कभी न कभी सुनने के लिए मिल जाता है और दिन में न जाने कितनी बार इस वाक्य का उपयोग किया जाता है। किसी के लिए यह एक सच्चाई, तो किसी के लिए महज बहाना होता है। वास्तव में समय का होना या न होना, किसी कार्य के प्रति हमारी प्राथमिकता या उपेक्षा को दर्शाता है। हम जिन कार्यों को प्राथमिकता देते हैं, उनके लिए हमारे पास पर्याप्त समय रहता है और जिन की उपेक्षा करते हैं उनके लिए कभी भी वक्त नहीं रहता है।

### समय है सिर्फ भगवान के लिए

ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर इस बात को हम सकारात्मक तरीके से लें, तो हमें लाभ ही लाभ होगा। ‘समय नहीं है’ यह वाक्य हम पाँच विकारों के विरुद्ध उपयोग में लाएँ। जब भी कोई व्यर्थ या अनावश्यक बात पास आने का प्रयास करे, तंग करे, तो ‘समय नहीं है’ इस वाक्य को दोहराएँ। इससे स्पष्ट होगा कि हम माया (विकार, विकृति) को कोई महत्व नहीं दे रहे हैं। सांसारिक जीवन में जब कोई कहता है, ‘मेरे पास समय नहीं है’ तो सामने वाला तुरंत पूछता है, ‘फिर आपके पास समय किसके लिए है।’ जब हम कहते हैं, माया के लिए हमारे पास समय नहीं है, तो तुरंत ही मन में सवाल

उभरेगा कि हमारे पास फिर समय किसके लिए है? इसका आसान-सा जवाब है, ‘शिव बाबा’ अर्थात् सिर्फ खुदा के लिए, भगवान के लिए वक्त है। अगर हम हर जगह प्राथमिकता शिव बाबा को देंगे, तो वैसे भी विकारों के लिए हमारे पास वक्त ही नहीं बचेगा।

### महत्व न देने पर विकार आना छोड़ देंगे

यदि किसी की बुराई देखकर गलत चिंतन शुरू हो जाता है तो तुरंत दोहराइये, ‘समय नहीं है।’ इससे गलत चिंतन से किनारा हो जाएगा। उसके स्थान पर हम अच्छे संकल्प ला सकते हैं जैसे, मैं बाबा का मीठा-सा, घ्यारा-सा, लाडला बच्चा हूँ, किसी की बुराइयों को देखकर मुझे क्या मिलेगा? मैं तो होलीहंस हूँ, पवित्र आत्मा हूँ, दूसरों की बुराइयाँ और अपवित्रता देखकर स्वयं को अपवित्र क्यों करूँ? ऐसे संकल्प करने से विकल्पों से स्वतः दूर होते जाएँगे। जब हमारे पास माया के लिए समय ही नहीं रहेगा, जब हम उसे कोई महत्व ही नहीं देंगे, तो ज़ाहिर है कि वह आना ही छोड़ देगी। ‘समय नहीं है’ यह वाक्य बाबा के लिए प्रयोग में लाया जाए तो नकारात्मक है लेकिन पाँच विकारों के लिए उपयोग में लाया जाए, तो सकारात्मक है। वाक्य एक ही है

लेकिन उपयोग अनुसार उसकी महत्ता बदल जाती है।

### दिल की याद में

#### अविश्वसनीय शक्ति

बात कितनी भी बुरी हो, अगर हमारा नज़रिया सकारात्मक रहेगा, तो वह हमारे लिए सकारात्मक बन जाएगी। मान लीजिए, किसी ने हमारी बेइज़ती की, हमें भला-बुरा कहा, तो हम सोचें कि हमारे पास इतना समय कहाँ है, जो उसके बुरे शब्दों पर ध्यान दें और फिर उनका चिंतन करें, कौन इतना समय बर्बाद करेगा? हम तो बाबा की याद में मस्त रहने वाली आत्माएँ हैं। फिर हमें किसी और की व्यर्थ बातों पर ध्यान देने की क्या ज़रूरत है? जब हम ऐसा सोचेंगे तो सामने वाला व्यक्ति किसी पुरानी और मूक फ़िल्म के अभिनेता की तरह प्रतीत होगा और हमारे चेहरे पर खुशी की झलक आएगी। फ़िल्म में हम बुरे शब्दों को सुनते हैं लेकिन गुस्सा नहीं करते क्योंकि हम जानते हैं कि वह अभिनेता हमें नहीं बोल रहा है। यहाँ भी हम सोच सकते हैं कि वह व्यक्ति महज अपना पार्ट बजा रहा है। ऐसा करते हुए हम बाबा की याद में रहेंगे, तो थोड़े समय के पश्चात् वह अपने आप शांत हो जाएगा। बाबा की याद में अविश्वसनीय शक्ति है, बस याद दिल से होनी चाहिए। ♦